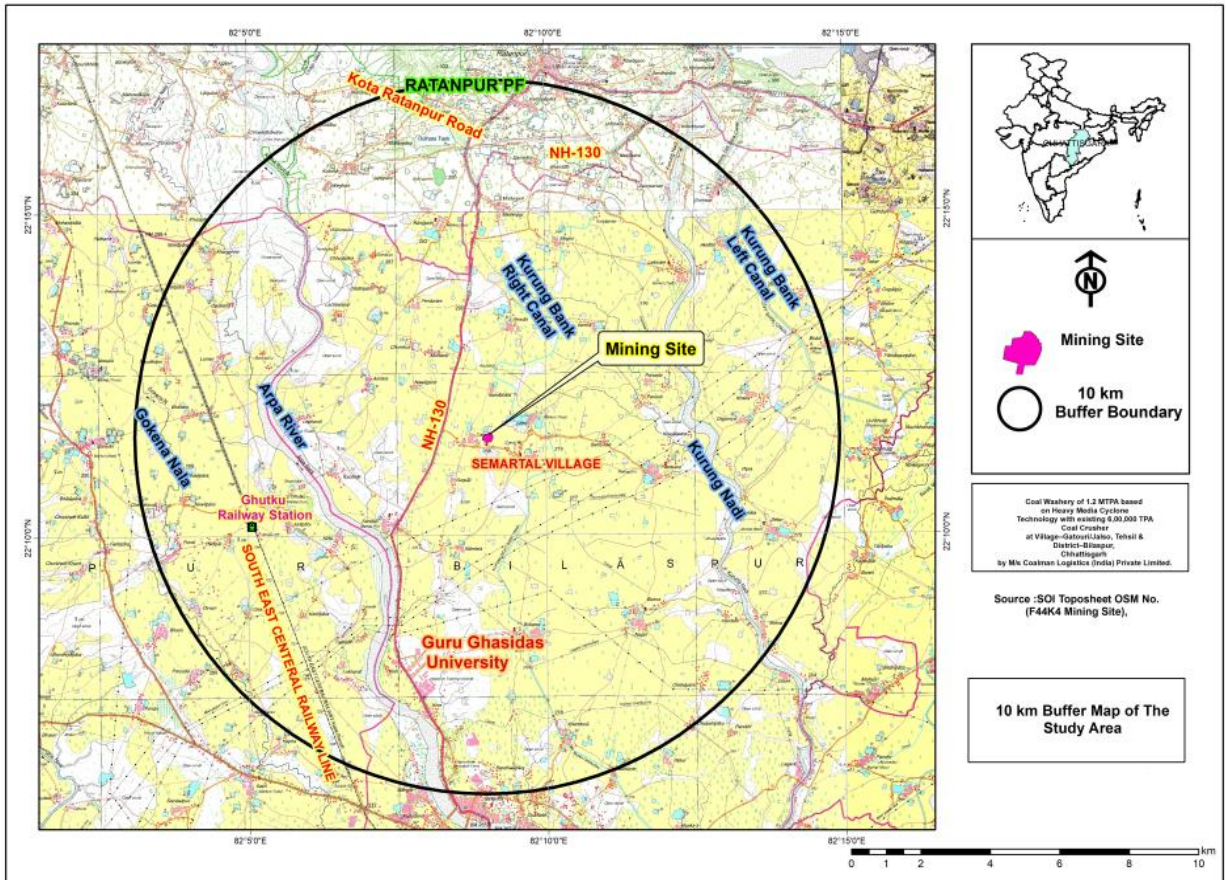


# जन सुनवाई के लिए पर्यावरणीय प्रभाव आकलन रिपोर्ट का सारांश

## वेट टाइप कोल वाशरी प्रोजेक्ट (Wet Type Coal Washery)

1.2 मिलियन टन प्रति वर्ष (मौजूदा कोल क्रशर 0.6 मिलियन टन प्रति वर्ष के विस्तार के साथ)

ग्राम - गटौरी/जलसो,, तहसील- मस्तूरी, जिला- बिलासपुर, छत्तीसगढ़



मै० कॉलमैन लॉजिस्टिक्स (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

(M/s Coalman Logistics (India) Private Limited)

(नवंबर- 2022)

## विषय-सूची

1.0 परियोजना विवरण	पृष्ठ -3-4
2.0 पर्यावरण का विवरण	पृष्ठ - 4-6
3.0 पर्यावरणीय प्रभाव और रोकथाम उपाय	पृष्ठ -7
4.0 पर्यावरण निगरानी कार्यक्रम	पृष्ठ -7-8
5.0 अतिरिक्त अध्ययन	पृष्ठ -8
6.0 परियोजना लाभ	पृष्ठ -8-9
7.0 पर्यावरण प्रबंधन योजना	पृष्ठ -9
8.0 कंसलटेंट	पृष्ठ -10

## 1.0 परियोजना विवरण

मै० कॉलमैन लॉजिस्टिक्स (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड ने ग्राम - गतौरी/जलसो, तहसील- मस्तूरी, जिला- बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में 1.2 एमटीपीए वेट टाइप कोल वाशरी का प्रोजेक्ट लगाने का निर्णय लिया है और 0.6 एमटीपीए क्षमता की मौजूदा कोल क्रशिंग यूनिट को बनाए रखने का निर्णय लिया, जो परियोजना परिसर के भीतर मौजूद है। प्रोजेक्ट हेवी मीडिया सायक्लोन टेक्नोलॉजी (Heavy Media Cyclone) पर आधारित है। प्रोजेक्ट साइट NH-130 से पूर्व की ओर लगभग 1.2 किमी की दूरी पर स्थित है। NH-130A दक्षिण दक्षिण पश्चिम दिशा की ओर 11.0 किमी पर है और निकटतम MDR अमतारा रोड पश्चिम दिशा में 3.4 किमी पर है। निकटतम गांव गतौरी है, जो पश्चिम दिशा में लगभग 0.1 किमी की दूरी पर स्थित है। निकटतम रेलवे स्टेशन घुटकू रेलवे स्टेशन है जो पश्चिम दक्षिण पश्चिम दिशा में लगभग 7.0 किमी की दूरी पर स्थित है और निकटतम हवाई बंदरगाह बिलासपुर, बिलासपुर है, जो दक्षिण में लगभग 22.5 किमी की दूरी पर स्थित है। साइट और अध्ययन क्षेत्र भारत के सर्वेक्षण टोपो शीट नंबर-F44K4 में आता है। अरपा नदी दक्षिण पश्चिम दिशा की ओर 4.0 किमी, कुरुंग नदी पूर्व दिशा की ओर 5.5 किमी, कुरुंग दायां तट नहर उत्तर पूर्व की ओर 0.8 किमी और खुटाघाट बांध परियोजना सीमा से 12.6 किमी उत्तर पूर्व दिशा की ओर है। 15 किमी के दायरे में कोई वन्यजीव अभ्यारण्य और राष्ट्रीय उद्यान नहीं हैं

मै० कॉलमैन लॉजिस्टिक्स (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड ने पर्यावरणीय मंजूरी प्राप्त करने के लिए MoEF&CC को 28 दिसंबर, 2021 को प्रोजेक्ट सख्या:- IA/CG/CMIN/266207/2022 के द्वारा आवेदन किया था और प्रोजेक्ट को EAC (Coal Mining) की 29<sup>th</sup> Meeting में 26 अप्रैल, 2022 को सुना गया और MoEF&CC के द्वारा Term of Reference फ़ाइल संख्या IA-J-11015/24/2022-IA-II(M) के तहत दिनांक 26 मई, 2022 को प्रदान किया गया है।

अंग्रेजी और हिंदी में संक्षिप्त ईआईए रिपोर्ट एवम Draft EIA सार्वजनिक सुनवाई के लिए छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण बोर्ड (प्रदूषण नियंत्रण कार्यालय) में जमा की जा रही है। सार्वजनिक सुनवाई प्रक्रिया के दौरान प्राप्त टिप्पणियों और सुझावों को अंतिम ई.आई.ए (Final EIA) रिपोर्ट में शामिल किया जाएगा। अंतिम ई.आई.ए (Final EIA) पर्यावरण मंजूरी के लिए SEIAA, छत्तीसगढ़ में जमा की जाएगी।

कोयला वाशरी परियोजना EIA Notification 14-9-2006 की अनुसूची 2 (A) के तहत आता है। परियोजना की कुल लागत 2000 लाख है और वाशरी 6.46 हेक्टेयर भूमि में स्थापित की जाएगी।

वाशरी में पानी की आवश्यक पानी धुलाई, धूल दमन और घरेलू उद्देश्य के लिए होगी। कोल वाशरी में क्लोज्ड वाटर सर्किट का उपयोग करके किया जाएगा जहां धोने के बाद पानी को ट्रीट किया जाएगा और कोल वाशिंग के लिए रिसाइकल किया जाएगा। धोने के दौरान इस्तेमाल हुए पानी की भरपाई के लिए वाटर सर्किट में केवल मेक-अप पानी डाला जाएगा। कोल वाशरी के लिए कुल पानी की आवश्यकता 245 KLD होने का अनुमान है।

परियोजना के संचालन चरण के दौरान 35 लोगों को रोजगार मिलेगा। जिसमें प्रबंधक, पर्यवेक्षक, कुशल और अकुशल श्रमिक आदि शामिल हैं। परियोजना के निर्माण चरण के दौरान 100-150 लोगों को दैनिक औसत आधार पर रोजगार मिलेगा। परिवहन, रख-रखाव, अनुरक्षण, अनुषंगी इकाइयों में लगभग 50 व्यक्तियों को अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलेगा।

कोयला वाशरी के लिए 1.5 मेगावाट बिजली की आवश्यकता होगी, जिसकी आपूर्ति छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड द्वारा की जाएगी। बिजली की विफलता के दौरान आपातकालीन बिजली की आवश्यकता को पूरा करने के लिए 500 के.वी.ए डीजल जनरेटर का उपयोग किया जायेगा।

कोयला वाशरी में कच्चे कोयले का अनलोडिंग, स्टोरिंग, हैंडलिंग, क्रशिंग, स्क्रीनिंग, मैग्रेटाइट के साथ मिश्रित पानी का उपयोग करके कोयले की धुलाई की जाएगी। अपशिष्ट जल का उपचार के बाद पानी को कोयला धोने के लिए रिसाइकल किया जाएगा।

इस वाशरी से कोई अपशिष्ट जल बहार नहीं छोड़ा जायेगा मिडलिंग्स, फाइन व रिजेक्ट को पावर प्लांट में उपयोग में किया जायेगा। वायु प्रदूषण को नियंत्रित के लिए जल का छिड़काव व बैग फ़िल्टर का उपयोग किया जायेगा।

## **2.0 वातावरण का विवरण**

पर्यावरण आधारभूत आंकड़े मानसून के बाद के मौसम में 1 मार्च 2022 से 31 मई, 2022 के दौरान एकत्रित किये गए हैं। साइट के आसपास 10 किमी क्षेत्र को अध्ययन क्षेत्र माना गया है। पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय और केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की मानक/अनुमोदित प्रक्रियाओं का पालन करके आंकड़े जुटाए गए। परियोजना स्थल पर हवा की गति, हवा की दिशा, सापेक्ष आर्द्रता और तापमान पर मौसम संबंधी आंकड़े उत्पन्न किए गए थे। परिवेश वायु गुणवत्ता 8 स्थानों पर निरीक्षण किया गया था। ध्वनि गुणवत्ता

का निरीक्षण 6 स्थानों पर गया है। 8 स्थानों पर सतही जल की गुणवत्ता का विश्लेषण किया गया। 8 स्थानों पर भूजल की गुणवत्ता का विश्लेषण किया गया। 5 स्थानों पर मृदा की गुणवत्ता का विश्लेषण किया गया। अध्ययन क्षेत्र में मौजूद पौधों और जानवरों के आंकड़े जिला वन विभाग से एकत्र किए गए। जिला सांख्यिकी पुस्तिका और तहसील अभिलेखों से लैंडयूज, डेमोग्राफी, व्यवसाय पैटर्न, क्रॉपिंग पैटर्न, मूलभूत सुविधाओं के आंकड़े एकत्र किए गए।

अध्ययन अवधि के दौरान न्यूनतम तापमान 22 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 47 डिग्री सेल्सियस, आर्द्रता 10% और अधिकतम आर्द्रता 25% दर्ज की गई। अध्ययन अवधि में प्रमुख हवा की दिशा अध्ययन अवधि के दौरान NE से SW थी। अध्ययन अवधि के दौरान औसत हवा की गति 2.43 मीटर/सेकेंड है। अध्ययन के दौरान हवा का झोंका NE-SW की दिशा में था और हवा की गति शांत से 6.48 मीटर/सेकेंड तक थी। हवा की दिशा और हवा की गति के आधार पर यह व्याख्या की जाती है कि अध्ययन अवधि के दौरान वायु प्रदूषक का अधिकतम फैलाव SW दिशा में होगा।

PM<sub>2.5</sub> का स्तर 30.1  $\mu\text{g}/\text{m}^3$  to 43.2  $\mu\text{g}/\text{m}^3$  बीच पाया गया। PM<sub>10</sub> का स्तर 52.8  $\mu\text{g}/\text{m}^3$  to 76.9  $\mu\text{g}/\text{m}^3$  के बीच पाया गया। SO<sub>2</sub> का स्तर 5.2  $\mu\text{g}/\text{m}^3$  to 11.7  $\mu\text{g}/\text{m}^3$  बीच पाया गया। NO<sub>2</sub> का स्तर 9.1  $\mu\text{g}/\text{m}^3$  to 23.1  $\mu\text{g}/\text{m}^3$  बीच पाया गया। CO<sub>2</sub> का स्तर 270  $\mu\text{g}/\text{m}^3$  to 650  $\mu\text{g}/\text{m}^3$  बीच पाया गया। परिवेशी वायु गुणवत्ता राष्ट्रीय मानकों के भीतर पाई गयी है।

दिन का ध्वनि स्तर 45.4 और 72.5 dB(A) के बीच पाया गया है। रात का ध्वनि स्तर 33.4 से 65.8 dB(A) के बीच पाया गया है।

भूजल के विश्लेषण के परिणाम निम्नलिखित हैं: -

- PH = 7.30 से 7.47 के बीच पाया गया है।
- Total dissolved solid = 380 से 420 मिलीग्राम/लीटर के बीच पाया गया है।
- Total hardness = 197 से 220 मिलीग्राम/लीटर के बीच पाया गया है।
- Total Alkalinity = 180 से 198 मिलीग्राम/लीटर के बीच पाया गया है।
- Iron = 0.5 से 0.8 मिलीग्राम/लीटर के बीच पाया गया है।
- किसी भी नमूने में जहरीली धातुएं नहीं पाई गईं।

किसी भी नमूने में कोलीफॉर्म नहीं मिला। भूजल की गुणवत्ता पीने के लिए BIS द्वारा निर्धारित निर्देशों से मिलती है (BIS:10500-2012)।

### सतही जल गुणवत्ता का सारांश

- pH = 7.26 से 7.89 के बीच पाया गया है।
- TDS = 310 से 490 मिलीग्राम/लीटर के बीच पाया गया है।
- DO = 4.3 से 6.3 मिलीग्राम/लीटर के बीच पाया गया है।
- COD = 10 से 58 मिलीग्राम/लीटर के बीच पाया गया है।
- BOD = 2.6 से 25 मिलीग्राम/लीटर के बीच पाया गया है।

सतह के पानी की गुणवत्ता सीपीसीबी (CPCB) के सी श्रेणी के सर्वश्रेष्ठ नामित उपयोग से मिलती है, जो पारंपरिक उपचार के बाद पीने के लिए उपयुक्त है।

अध्ययन क्षेत्र की मृदा बेसिक है। पीएच 7.57 से 7.88 के बीच है। विशिष्ट चालकता 288 से 335  $\mu\text{mhos/सेमी}$  के बीच है। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम की एकाग्रता संतोषजनक पाई गई। स्टड एरिया की मिट्टी धान की खेती के लायक है।

Cation exchange क्षमता 13.1 से 14.6 meq/100 ग्राम के बीच पाया गया है। organic matter 0.77 से 0.99% के बीच पाया गया है। कॉपर, जिंक, बोरॉन और आयरन जैसे सूक्ष्म पोषक तत्व वृक्षारोपण के लिए न्यूनतम और पर्याप्त हैं।

वनस्पति और जीव: अध्ययन क्षेत्र में कोई राष्ट्रीय उद्यान या वन्यजीव अभयारण्य या बायोस्फीयर रिजर्व मौजूद नहीं है। अध्ययन क्षेत्र में वनस्पतियों और जीवों की कोई लुप्त प्रजाति नहीं पाई गयी है। अध्ययन क्षेत्र में जंगली जानवरों का कोई प्रवासी गलियारा मौजूद नहीं है।

2011 की जनगणना के अनुसार अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या 106228 है जिसमें से 50.9 प्रतिशत पुरुष और शेष 49.1 प्रतिशत महिलाएं हैं। अध्ययन क्षेत्र में कुल लिंगानुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 965 महिलाओं के लिए निकाला गया है। बिलासपुर जिले के लिए 986 और छत्तीसगढ़ राज्य के लिए 991 के आंकड़े की तुलना में यह बहुत कम है।

### 3.0 पर्यावरणीय प्रभाव और रोकथाम उपाय

हैंडलिंग, क्रशिंग, स्क्रीनिंग प्रक्रिया के दौरान कोयला धूल मुख्य प्रदूषक है। कोयला हैंडलिंग के दौरान धूल के उत्पादन को कम करने के लिए पानी के छिड़काव किया जाएगा। कोल क्रशिंग और स्क्रीनिंग के दौरान डस्ट जनरेशन को कम करने के लिए डस्ट सप्रेसन सिस्टम लगाया जाएगा। कृशर यूनिट में डस्ट निष्कर्षण प्रणाली और बैग फ़िल्टर लगाया जायेगा। सभी कन्वेयर बेल्ट को कवर किया जाएगा। आंतरिक सड़क को पक्का किया जायेगा। औद्योगिक वैक्यूम क्लीनर का उपयोग कार्यशालाओं और अन्य कार्य क्षेत्रों में किया जाएगा। सभी आंतरिक सड़कों की दैनिक सफाई के लिए मैकेनिकल रोड स्वीपिंग मशीनों को तैनात किया जाएगा।

कोयला धुलाई के दौरान उत्पन्न शत प्रतिशत अपशिष्ट जल का उपचार किया जाएगा। उपचार के बाद पानी को कोयला धोने के लिए रिसाइकल किया जाएगा। घरेलू सीवेज का उपचार सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (STP) में किया जाएगा। पौध रोपण विकास के लिए शोधित पानी का उपयोग किया जाएगा।

कम शोर उत्सर्जक संयंत्र और मशीनरी का उपयोग किया जाएगा। 33% भूमि का क्षेत्र पौध रोपण के रूप में विकसित किया जाएगा। प्लांट की बाउंड्री पर शोर का स्तर 70 dBA से नीचे बना रहेगा।

कोयला धुलाई से मिडलिंग्स, फाइन व रिजेक्ट का उत्पादन होगा। ट्रको की आवाजाही में कोई परिवर्तन नहीं होगा, अभी जितने ट्रक रेलवे साइडिंग में आ रहे हैं वह स्थिति बरकरार रहेगी। परिवहन अधिकारियों के परामर्श से उचित यातायात प्रबंधन योजना लागू की जाएगी।

### 4.0 पर्यावरणीय निगरानी कार्यक्रम

पर्यावरण प्रबंधन सेल (EMC) की स्थापना नियमित पर्यावरण निगरानी के लिए की जाएगी। निर्धारित कानूनों और मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए निगरानी की जाएगी। EMC के प्रमुख प्लांट हेड को रिपोर्ट करेंगे। योग्य कर्मचारियों को EMC में भर्ती किया जाएगा। परिवेशी वायु, स्टैक उत्सर्जन, fugitive धूल के उत्सर्जन, ध्वनि के स्तर, भूजल की गुणवत्ता, सतही जल की गुणवत्ता और स्थल की मृदा की पर्यावरणीय निगरानी मानदंडों के अनुसार की जाएगी। (EMC) निम्नलिखित कार्यों के लिए जिम्मेदार होगा:-

नियमित निगरानी: -

- Fugitive धूल को मापना, कार्य वातावरण में PM<sub>2.5</sub> और PM<sub>10</sub> को मापना और असामान्य स्थिति को रिपोर्ट करना और उचित कार्यवाही करना ।
- क्रेशर के upwind और downwind की दिशा में परिवेशी वायु (Ambient Air )की गुणवत्ता को मापना (उस स्थल पर जो की 120 डिग्री उपस्थित है )
- अपशिष्ट जल गुणवत्ता (इनलेट और आउटलेट पानी - अपशिष्ट उपचार संयंत्र) की जाँच करना।
- कोयला भंडारण क्षेत्र, और आसपास के गांवों के पास भूजल की गुणवत्ता की जाँच करना।
- स्थल के Upwind और Downwind नदी का जल गुणवत्ता।
- संयंत्र सीमा, निकटतम निवास स्थान और कार्य क्षेत्रों में ध्वनि की निगरानी।
- संयंत्र की सीमा के भीतर ग्रीनबेल्ट और हरियाली का विकास और रख रखाव।

## 5.0 अतिरिक्त अध्ययन

कोयला संग्रहण क्षेत्र को आग से सुरक्षा के लिये उचित अग्निषमन उपकरणों की व्यवस्था किया जाएगा । श्रमिकों के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के लिए आपातकालीन योजना बनायी जायेगी जिससे किसी भी दुर्घटना से तुरन्त बचाव किया जा सके।

सी.ई.आर (CER) गतिविधियां और जन सुनवाई प्रतिबद्धता तीन साल की अवधि में पूरे किये जाएंगे। यह राशि स्थानीय स्कूलों में कक्षाएं बनाने, शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराने, सामुदायिक केंद्र बनाने, आसपास के गांवों में पेयजल सुविधा विकसित करने, क्षेत्र में एनीकट और चेक डैम जैसी वर्षा जल संचयन संरचनाएं बनाने, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में बुनियादी सुविधाओं और उपकरणों के विकास के लिए खर्च की जाएगी. और जन सुनवाई के अनुसार।

## 6.0 परियोजना के लाभ

कोयला वाशरी में खराब ग्रेड के कोयले को धोकर उच्च ग्रेड कोयले में परिवर्तित किया जाता है। इस धुलाई के दौरान खराब कोयले में उपस्थित उपसिष्ठ प्रदूषण जैसे धूल मिट्टी को हटाया जाता है । उच्च ग्रेड कोयले का इस्तेमाल स्टील और सीमेंट बनाने के लिए किया जाता है । विद्युत उत्पादन में अगर हाई ग्रेड कोयले का उपयोग करे तो उत्पादन क्षमता व दक्षता को बढ़ाया जा सकता है ।

निम्नलिखित वजहों से कोयला वाशरी की मांग बढ़ रही है:



- भारत में अच्छी गुणवत्ता की कोयला खदानों का खतम होना ।
- कच्चे कोयले में यांत्रिक खनन से अशुद्धियाँ बढ़ती हैं ।
- उच्च परिवहन लागत - उच्च राख कोयले के परिवहन ।
- सख्त पर्यावरणीय आवश्यकता (इस्पात संयंत्रों, बिजली संयंत्रों और सीमेंट संयंत्रों द्वारा प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण के संबंध में)

निर्माण अवधि के दौरान लगभग 100-150 व्यक्तियों को 12 महीने के लिए रोजगार उपलब्ध होगा । कोयला वाशरी के संचालन के दौरान 35 लोगों को सीधे रोजगार मिलेगा। लगभग 50 लोगों को अप्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा। अर्धकुशल एवं अकुशल श्रेणी में रोजगार हेतु स्थानीय लोगों को वरीयता दी जायेगी।

## 7.0 पर्यावरण प्रबंधन योजना

पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों एवं पर्यावरण सुरक्षा के लिए जरूरी एवं कारगर पर्यावरण प्रबन्धन योजना बनाई गयी है। सुझाये गये सुरक्षा उपायों एवं पर्यावरण प्रबन्धन योजना को क्रियान्वित करने के लिए कुल रू 303 लाख की आवश्यकता है और आवर्ती प्रतिवर्ष 90 लाख की आवश्यकता पड़ेगी । पर्यावरण प्रबन्धन सेल (EMC) सभी प्रदूषण नियंत्रण उपकरणों, पानी चक्रण एवं इसका पुर्न उपयोग, निर्धारित पर्यावरणीय मानकों के अनुरूप रखने के लिए नियमित पर्यावरणीय प्रबोधन करेगी। पर्यावरण प्रबन्धन सेल (EMC), स्पैट आयल एवं लुब्रिकेंट के निपटान पर नजर रखेगी। इकाई परिसर के अन्दर – बाहर हरियाली के विकास का जिम्मेदारी पर्यावरण प्रबन्धन इकाई की होगी। हरित पट्टी का विकास सी.पी.सी.बी. के दिशा निर्देशों के तहत किया जायेगा। पर्यावरण प्रबन्धन सेल (EMC) संसाधन संरक्षण, वर्षा जल संग्रहण को क्रियावित करेगी एवं कर्मचारियों के लिए पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करायेगा।

कम्पनी कर्मचारियों की समय-समय पर स्वास्थ्य जाँच की जायेगी। पर्यावरण प्रबन्धन सेल कर्मचारियों के लिए स्वच्छ कार्य क्षेत्र एवं सुरक्षा उपकरणों के उपयोग को सुनिश्चित करेगा। पर्यावरण प्रबन्धन सेल कम्पनी के सुरक्षा विभाग के साथ मिलकर इकाई कमीशनिंग के दौरान होने वाले जोखिम के प्रति सजग रहेगा। पर्यावरण प्रबन्धन सेल प्रदूषण कम करने, दुर्घनाओं को कम करने एवं अपशिष्टों के निष्पादन को कम करने के उपाय सुझायेगी। परियोजना में लागू पर्यावरण प्रबन्धन योजना इस इकाई से सम्बन्धित पर्यावरणीय कानूनों एवं नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करेगी ताकि होने वाले सभी पर्यावरणीय प्रभावों की कम किया जायेगा।

## 8.0 कंसलटेंट

वेट टाइप कोल वाशरी प्रोजेक्ट की ई.आई.ए/ई.एम.पी की तैयारी के लिए नियुक्त सलाहकार मैसर्स जी.आर.सी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड हैं। जी.आर.सी इंडिया भारत में आई.एस.ओ 9001:2015, 14001:2015 और आई.एस.ओ 45000:2018 प्रमाणित अग्रणी पर्यावरण परामर्श कंपनी है। इसे राष्ट्रीय शिक्षा और प्रशिक्षण बोर्ड (NABET), क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया (QCI) द्वारा मान्यता प्राप्त है, जो भारत में सर्वोच्च मान्यता प्राधिकरण है। जी.आर.सी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ने एक आधुनिक अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला की स्थापना की, जो आई.एस/आई.एस.ओ 9001:2015, आई.एस/आई.एस.ओ 14001:2015 और आई.एस/आई.एस.ओ 45001:2018 के अनुरूप है। विभिन्न अध्ययनों के साथ सभी परियोजना नमूनाकरण और विश्लेषण जी.आर.सी प्रयोगशालाओं द्वारा किया जाता है। प्रयोगशाला ने एन.ए.बी.एल से मान्यता प्राप्त की जिसे प्रक्रिया के अनुसार नवीनीकृत किया गया है (वर्तमान प्रमाणपत्र संख्या टी.सी-7501 जोकि 25.04.2023 तक वैध है) और एम.ओ.ई.एफ.&सी.सी (राजपत्र अधिसूचना संख्या एस.ओ. 388 (ई) दिनांक 10.02.2017) द्वारा मान्यता प्राप्त है।